''अब सुख की दुनिया का फाउण्डेशन लग रहा है इसलिए गफलत नहीं करनी है, अपनी सम्भाल करनी है''

गीत:- किसी ने हमको बनाके अपना मुस्कराना सिखा दिया...

ओम् शान्ति। एक है मुस्कराने की दुनिया और दूसरी है रोने की दुनिया। अभी रोने की दुनिया का अन्त और मुस्कराने की दुनिया अथवा सुख की दुनिया का सैपलिंग लग रहा है। अभी हम संगम पर मुस्कराने अर्थात् सुख की दुनिया में चलने के लिये पुरुषार्थ कर रहे हैं इसलिए अपना सारा अटेन्शन उसी पर है। अभी इस रोने की दुनिया में कोई धन-सम्पत्ति की या मान-मर्तबे की तमन्ना नहीं रखनी है क्योंकि यहाँ धन-सम्पत्ति में भी रोना ही है यानि दु:ख ही है। किसी बात में कोई सुख नहीं रहा है। इसलिये अभी बाप कहते हैं कि जो मैं मुस्कराने की अर्थात् सदा सुख की दुनिया बना रहा हूँ, उसमें चलने की तैयारी करो। देखो, देवताओं के चेहरे भी बड़े अच्छे बनाते हैं, उनके चेहरे में पवित्रता, दिव्यता, मुस्कराना आदि-आदि दर्शाते हैं। यह सब देवताओं के चिन्ह सबको आकर्षित करते हैं। तो अभी हम वही संस्कार बना रहे हैं अथवा धारण कर रहे हैं। वहाँ कोई दु:ख के चिन्ह है ही नहीं। वहाँ कभी रोना होता नहीं। इसलिये बाप कहते हैं अभी बहुत रोया, बहुत दु:ख पाया अर्थात् दु:ख की दुनिया के अनेक जन्म भोगे। अभी वह समय पूरा हो रहा है। यह रात पूरी हो करके दिन आयेगा। सदा रात भी नहीं रहती है तो दिन भी सदा नहीं रहता। इसलिये दु:ख की जनरेशन्स अभी पूरी होती है, अभी हमारे सुख की जनरेशन्स चालू होती है। अभी सुख की दुनिया का फाउण्डेशन लग रहा है इसलिये बहुत सम्भाल रखने की जरूरत है। बाप कहते हैं अभी की यह जो जीवन है इसके लिए ही गाया हुआ है कि मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है। इस जन्म का बहुत बड़ा महत्व है क्योंकि इसमें हम अपने ऊंच जनरेशन्स का फाउण्डेशन लगा सकते हैं।

लोग तो समझते हैं कि मनुष्य जन्म 84 लाख योनियों के बाद मिलता है इसलिये मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है, परन्तु ऐसा नहीं है। अगर हमारा मनुष्य जन्म 84 लाख योनियों के बाद ही एक सुख का जन्म है तो फिर सभी मनुष्य सुखी होने चाहिए ना! दूसरी योनियों में तो हम दु:ख भोगते आये इसमें तो सुख होना चाहिए, फिर इस जन्म में क्यों दु:ख देखते हैं? अगर यह सुख का जन्म होता तो सभी मनुष्य सुखी होते। परन्तु ऐसा है ही नहीं और न मनुष्य कोई 84 लाख योनियाँ भोगते हैं। मनुष्य को तो मनुष्य जन्म में ही अपने कर्म का हिसाब भोगना है। बाकी ऐसे नहीं है कि कोई जानवर, पंछी, पशू या वृक्ष आदि मनुष्य बनता है। नहीं। मनुष्य को अपने कर्म का हिसाब मनुष्य जन्म में पाना है। और यह भी जानते हैं कि मनुष्य के बहुत में बहुत 84 ही जन्म होते हैं। बाकी जो जितना-जितना पीछे आते हैं उतने कम जन्म होते हैं। तो यह सभी हिसाब अभी बुद्धि में हैं, उसी हिसाब अनुसार अभी हमारा यह अन्तिम जन्म है जिसमें हम अभी अनेक जन्मों की प्राप्ति कर सकते हैं। इस जन्म की ही महिमा है कि यह जन्म सबसे उत्तम है क्योंकि इसमें हम उत्तम बन सकते हैं। देवताओं से भी अधिक इस जन्म की महिमा गाई जाती है इसीलिये इसी जन्म में ही हम ऊंचे

ते ऊंचे बनते हैं। तो इस जन्म की बहुत सम्भाल करनी है और इसमें अटेन्शन भी बहुत रखना है। इसमें अगर हम गफ़लत करेंगे तो मनुष्य जन्मों की जो ऊंच प्राप्ति है उससे वंचित हो जायेंगे।

अभी परमात्मा आ करके हमको यह धारणायें करवा रहे हैं अथवा ऊंच बनाने का बल दे रहे हैं। तो अभी जब उससे बल मिल रहा है तो लेना ही है। ऐसे नहीं हम आपेही ऊंच बन जायेंगे। नहीं। बनाने वाला जब आया है तो उनसे अपने को बनना है। कैसे बनना है? उनकी जो आज्ञा है, जो वह फरमान करते हैं अथवा मत देते हैं, उस पर चलने से हम ऐसा ऊंच बन सकते हैं। अब उनका डायरेक्शन है - ''बी होली एण्ड बी योगी'' (पवित्र बनो, राजयोगी बनो) यह दो बातें मुख्य हैं कि मुझे याद करो और पवित्र रहो। तो यह बात अपने बुद्धि में अच्छी तरह से रख करके उनके फरमान पर अपने को चलाना है तब अपना जो सौभाग्य है वह ऊंच पा सकेंगे। ऐसे तो नहीं समझते हो कि यह सब कल्पनायें हैं, ऐसा तो ख्याल नहीं आता है ना! कल्पना क्यों समझी जाये! जबकि हम देख रहे हैं कि यह दु:ख की दुनिया है। यह दु:ख कल्पना तो नहीं है ना! यह प्रैक्टिकल है तो जरूर सुख भी तो प्रैक्टिकल में होना चाहिए। ऐसे तो नहीं समझते कि यह संसार तो सदा दु:ख का ही है? संसार में सुख और दु:ख दोनो ही हैं, परन्तु सुख का भी तो समय है ना। ऐसे नहीं कहेंगे कि अभी जो सुख है बस यही सुख है।

कई ऐसे समझते हैं कि अभी जो सुख है बस यही स्वर्ग है, यही सुख है। बस, ऐसा ही सुख दु:ख है, परन्तु नहीं। अभी के सुख को सुख नहीं कहेंगे, वो सुख जो था उसमें हम सदा सुखी थे, वह चीज़ ही और है इसलिये उसको सुख कहेंगे। कल्पना का संकल्प भी क्यों आता? क्योंकि आज है ही नहीं इसलिये उनको कल्पना समझते हैं। परन्तु नहीं, यह विवेक और बाप द्वारा मिली इस नॉलेज के बल से समझते हैं कि जैसे दु:ख है ऐसे सुख भी प्रैक्टिकल में होना चाहिए। ऐसे नहीं कि सुख खाली कल्पना है। कई तो ऐसे बतलाते हैं कि भले दु:ख आवे परन्तु तुम समझो कि मैं सुखी हूँ इसलिये कई समझते हैं कोई सुख की इच्छा या कोई तमन्ना नहीं रखनी है, उससे इच्छा मात्रम् अविद्या बनना है। सुख की इच्छा ही क्या रखनी है, जो होता है उसमें ही सुख समझो। फिर भले रोग हो, भले कोई अकाले मृत्यु हो, कोई भी ऐसी बात हो परन्तु तुम अपने को समझो मैं सुखी हूँ। यह तो हो गया अपनी कल्पना का सुख। इसको थोड़ेही प्रैक्टिकल कहेंगे। जैसे दु:ख प्रैक्टिकल है, रोग होता है, अकाले मृत्यु होता है, कई बातें दु:ख की आती है। तो जैसे हम प्रैक्टिकल दु:ख को देख रहे हैं और अपने अनुभव में उसको पा रहे हैं, तो सुख भी ऐसा प्रैक्टिकल होना चाहिए। कई फिर कह देते हैं आत्मा तो निर्लेप है, उस पर कोई लेप-छेप है ही नहीं, इसलिए तू तो सदा सुखी है। अब यह तो कल्पना हो गई।

दु:ख को जरा कम महसूस कराने के लिये ऐसे कह देते हैं कि यह तो है ही जगत मिथ्या। इसको मिथ्या समझ लें या समझ लें आत्मा तो है ही निर्लेप, उसमें कोई लेप-छेप है ही नहीं। इसलिये तू दु:ख को, दु:ख नहीं समझ, अपने को सुखी समझ, परन्तु वह तो कोई सुख नहीं हुआ ना। तो अभी हम देख रहे हैं कि दु:ख की सीमा कहाँ तक आ करके पहुँची है, बाकी भी जो थोड़ी मार्जिन है वह भी अपने समय पर पूरा हो करके, फिर सुख की दुनिया को आना ही है, लेकिन उसका फाउण्डेशन अभी लग रहा है। उसके लिये हमें अभी अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना पड़ेगा क्योंकि

यह कर्म क्षेत्र है, कर्म भूमि है इसमें जो बोयेंगे सो पायेंगे, यह भी इसका नियम है। इसमें कोई लॉ ब्रेकर नहीं बन सकता। मैं भी लॉ ब्रेक नहीं कर सकता हूँ, मैं भल वर्ल्ड ऑलमाईटी अथॉरिटी हूँ लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं चाहूँ तो आसमान को नीचे करूँ, धरती को ऊपर करूँ। वह समझते हैं भगवान जो चाहे वह कर सकता है, वह मुर्दे को भी जिन्दा कर सकता है, परन्तु भगवान या शक्ति का अर्थ यह नहीं है कि मुर्दा पड़ा है उसे जिन्दा करूँ तो मेरी शक्ति है। अब आत्मा को तो शरीर छोड़ने का ही है। अच्छा उसको जिन्दा करूँ, इससे फायदा क्या हुआ? फिर क्या मुर्दा नहीं बनेगा? फिर भी बनेगा। तो जो हर चीज़ का नियम है, वह तो चलेगा ही। उसमें भगवान कोई शक्ति दिखलाये, वह खुद कहते हैं यह मेरा कर्तव्य नहीं है।

यह जो 5 तत्व हैं, हर तत्व का भी अपना नियम है, वह भी गोल्डन, सिल्वर, कॉपर एण्ड आइरन एज अनुसार अपनी स्टेजेस में आते हैं। यह अर्थक्वेक होता है, यह फ्लड्स होती हैं, यह तूफान आता है, यह सभी होता है, तो देखो यह भी अभी डिस आर्डर में हो गये हैं ना। यह भी अभी तमोप्रधान हो गये हैं। हर चीज़ में अभी तमोगुण है। अभी हर चीज़ बिगड़ चुकी है, अभी बाप आकर हर चीज़ को सुधारते हैं, पहले तो मनुष्य आत्मा को सुधारते हैं, उससे सब चीज़ें स्वत: सुधर जाती है। फिर उस सुधरे हुए संसार में सदा सुख है, फिर कोई चीज़ एक दो को दु:ख नहीं देती है। अभी सब चीज़ों से दु:ख मिलता है, तो इन सभी बातों को समझना है और किस तरह से यह संसार अथवा सृष्टि का यह सब चलता है, इसी का मैं नॉलेजफुल हूँ, मेरे पास इसकी फुल नॉलेज है यह कर्म का खाता कैसे चलता है, कैसे नम्बरवार आते हैं, इन्हीं बातों को मैं जानता हूँ इसलिये कहते हैं कि ज्ञान को कोई मनुष्य यथार्थ रीति से नहीं समझा सकते क्योंकि मनुष्य तो सब इस चक्र में आने वाले हैं ना। जो चक्र में आने वाले हैं, वह इन बातों को नहीं जानेंगे, जो चक्र से बाहर है उसके पास यह सब नॉलेज रहती है। तो बाप कहते हैं यह सारी जानकारी मेरे पास ही है और सबसे भूल जाती है। इसके लिए मुझे आना पड़ता है, मैं आ करके फिर यह नॉलेज समझाता हूँ, तो सुनाने वाला समझाने वाला मैं एक ही हो गया ना। बल भी मेरे द्वारा मिलने का है क्योंकि बल देने वाला भी मैं, मेरे में ही वह पॉवर रहती है और तो सब अपनी पॉवर्स जन्म-मरण के चक्र में आ करके खो देते हैं। तो यह सब सीधी बातें हैं, इसमें मूँझने की बात है ही नहीं। इसलिये मुझे परम आत्मा, सर्व शक्तिवान, जानी-जाननहार, ज्ञान का सागर कहा जाता है। अब यह सब मेरी महिमा कोई मुफ्त की थोड़ेही है, मैंने काम किया है और मेरा कुछ कर्तव्य है, मैंने बहुत ऊंचा काम किया है इसलिये महिमा है। जैसे मनुष्य की भी महिमा क्यों होती है? गांधी बड़ा अच्छा आदमी था, ऊंचा था। ऊंचा माना ऐसे नहीं एकदम कोई बड़ा बड़ा था। बड़ा माना अपने कर्तव्य में बड़ा था। उसने कुछ कर्तव्य अच्छे किये इसलिये उनको सब याद करते हैं, उनकी सब महिमा करते हैं। तो मनुष्य की हिस्ट्री में भी जो बातें आती हैं कि फलाने ने यह काम अच्छा किया। उसी अनुसार फिर उनका गायन भी होता है। तो परमात्मा की भी जो महिमा है, तो जरूर उसने भी हमारे लिये कुछ काम किया होगा ना। बाकी ऐसे थोड़ेही है कि बस ऊंचा बैठा है, उसकी शक्ति चलती रहती है या उसका यह काम होता ही रहता है। उसने आ करके कुछ किया, तो क्या किया है? हम मनुष्यों को ऐसा ऊंचा उठाया है और इस तरीके से उठाया है इसलिये उसकी महिमा है। तो अभी समझना है कि

परमात्मा की महिमा और परमात्मा का कर्तव्य क्या है उनकी सबने महिमा क्यों गाई है? जो भी धर्म पितायें भी आये हैं उन्होंने भी उनकी महिमा गाई है। गुरुनानक देव, क्राईस्ट, बुद्ध आदि उन्होंने भी तो इशारा उसकी तरफ किया है ना। तो यह सब साफ बातें हैं जिसको समझ करके, उसी अनुसार पुरुषार्थ करना है। अभी बाप खुद फरमान करते हैं कि मुझे याद करो और अपने कर्मों को अच्छा पवित्र रखो तो तुम्हारा हेविन में चलने का जो अधिकार है, वह तुमको प्राप्त होगा। इसमें दूसरी क्या बात है? तुम वैसे भी कर्म तो करते ही हो परन्तु वह कर्म तुम्हारे रॉंग होते जाते हैं, उसी से तुम्हारा दु:ख बनता जाता है इसलिये बाप कहते हैं अभी मैं जो समझ देता हूँ, उसको ले करके अच्छी तरह से करो, मेरे डायरेक्शन्स पर रहो। मेरी मत पर चलो तो फिर तुम्हारे एक्शन्स राइट रहेंगे और उसके आधार से तुम सुखी रहेंगे।

हमको अपने एक्शन्स से ही तो बनना बिगड़ना है। उसको हम क्या बनायें, कैसे बनायें उसकी हमको समझ चाहिए, वह अभी समझ मिल रही है, उस पर चलना है। अच्छा।

देखो, कितनी सिम्पल और सहज बातें है, इसके लिए कोई वेद-शास्त्र, ग्रंथ-पुराण पढ़ने की हठयोग, प्राणायाम आदि करने की क्या दरकार है। सिर्फ अपने कर्मो को सुधारते चलो। वह सुधारो कैसे? वह समझाते हैं। उसके लिये तुमको कोई विद्वान, पण्डित वा आचार्य बनने की बात ही नहीं है। तुमको अपने कर्मों को स्वच्छ बनाना है। वह स्वच्छता, पवित्रता क्या है, वह भी स्पष्ट समझाते हैं, कि तुम मेरी याद के बिना पवित्र बन ही नहीं सकते हो। भले तुम कोई देवता से योग करो, किसी के भी योग से तुम पवित्र नहीं बनेंगे। पापों को दग्ध करने का बल मेरी याद में ही है। इसीलिये बाप कहते हैं मेरे से योग अथवा कनेक्शन रखो। जैसे बत्तियों का कनेक्शन मेन पॉवर हाउस से है, अगर वहाँ से न हो तो लाइट नही होगी। वह बल नहीं आयेगा। इसी तरह तुम्हारा कनेक्शन मेरे से हो, मैं हूँ मेन पॉवर हाउस तो उससे कनेक्शन चाहिए। अगर उससे कनेक्शन नहीं होगा तो तुमको ताकत नहीं मिलेगी और ताकत नहीं मिलेगी तो पाप दग्ध नहीं होंगे। पाप दग्ध नहीं होंगे तो तुम आगे नहीं बढ़ सकोगे, इसलिए कहते हैं एक मेरे से योग लगाओ। मेरी मत के बिना तेरी गति सद्गति नहीं हो सकती।

अच्छा - मीठे बापदादा, और माँ का लाडले बच्चों को यादप्यार और नमस्ते। ओम् शान्ति।

वरदान:- एकरस स्थिति के आसन पर मन-बुद्धि को बिठाने वाले सच्चे तपस्वी भव

तपस्वी सदा आसनधारी होते हैं, वे कोई न कोई आसन पर बैठकर तपस्या करते हैं। आप तपस्वी बच्चों का आसन है–एकरस स्थिति, फरिश्ता स्थिति। इन्हीं श्रेष्ठ स्थितियों के आसन पर स्थित होकर तपस्या करो। जैसे स्थूल आसन पर शरीर बैठता है ऐसे श्रेष्ठ स्थिति के आसन पर मन-बुद्धि को बिठा दो और जितना समय चाहो, जब चाहो—आसन पर बैठ जाओ। इस समय श्रेष्ठ स्थिति के आसन पर बैठने वालों को भविष्य में राज्य का सिंहासन प्राप्त होता है।

स्लोगन:-

दूसरे के विचारों को अपने विचारों से मिलाकर सर्व को सम्मान देना ही माननीय बनने का साधन है।